

**उद्देश्य -** इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वरलिपि पद्धति, भारतीय स्वर वाद्यों एवं उसके घरानों व रागशास्त्र का विस्तृत ज्ञान देना और संगीत ग्रन्थों व संगीतज्ञों के जीवन से अवगत कराना है।

द्वितीय सेमेस्टर

क्र० सं०	कोर्स का नाम	कोर्स कोड	अंक	श्रेयांक
4	स्वरवाद्य - रागों और तालों का अध्ययन II	एम०पी०ए०एम०आई० - 506	100	2
	इकाई 1 - राग निर्माण, वादी, सम्वादी, अनुवादी एवं विवादी स्वर का महत्व।			
	इकाई 2 - राग एवं रागिनी की व्याख्या, रागों का समय चक्र, ग्राम और मूर्च्छना।			
	इकाई 3 - पाठ्यक्रम के रागों का पूर्ण वर्णन, तुलना एवं स्वर समूह द्वारा राग पहचानना।			
	इकाई 4 - संगीत के प्रसिद्ध ग्रन्थों (नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी, स्वरमेलकलानिधि व संगीत दर्पण) का अध्ययन।			
	इकाई 5 - संगीत संबंधी विषयों पर निबंध लेखना।			
	इकाई 6 - मसीतखानी गत का परिचय, पाठ्यक्रम के रागों में मसीतखानी गत, स्थाई व अन्तरे के तोड़ों को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 7 - रजाखानी गत का परिचय, पाठ्यक्रम के रागों में रजाखानी गत, स्थाई व अन्तरे के तोड़ों को लिपिबद्ध करना।			
	इकाई 8 - पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन व आड़) सहित लिपिबद्ध करना।			

नोट - विद्यार्थी द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखे गए राग व ताल के अनुरूप अध्ययन करें।

द्वितीय सेमेस्टर

राग- अहीर भैरव, झिंझोटी, बैरागी, बिहागड़ा व मालकौंस

ताल- झपताल, एकताल, रूपक व 9 मात्रा की ताल

सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -

- वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र० ।
- श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।
- डॉ० लक्ष्मीनारायण गर्ग, राग विशारद (दोनों भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र० ।
- पं० विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ० प्र० ।
- श्री विनायक राव पटवर्धन, राग विज्ञान (दोनों भाग)।